पहचानें मन की अद्भुत शक्ति को

मन की क्रियाएं, मन के दायरे से कुछ बाहर होते हैं, कुछ अंदर होते हैं। लेकिन मन की क्रियाओं का होना किसी न किसी दायरे में घटित घटना के आधार से ही होता है। स्थिति ये है कि कुछ भी करने से पहले मन की उन भावनाओं को बड़े ध्यान से देखना व सोचना ज़रूरी है, लेकिन मन ऐसा है कि वो बिना कहे भी कुछ सोचता ही रहता है। इधर-उधर की बातों को लेकर एहसासों को जन्म देता रहता है।

एहसास क्या होते हैं? एहसास कुछ नहीं हैं, बस कुछ भावनाओं को चित्रित करके हम सभी सोचते रहते हैं। अब भावनायें जब जन्म लेती हैं, तो जन्म लेने से पहले वो किसी न किसी बात से कभी न कभी जुड़ी ही होंगी, लेकिन मन ने उसको देखा हुआ होता है। कई बार बात हमसे जुड़ी नहीं भी होती, फिर भी वो बात ऐसे उमड़-घुमड़ के हमारे सामने आती है जैसे हमने ही किया हो। इससे एक बात तो सिद्ध है कि यदि हम इन्द्रियों द्वारा एक बार किसी भी चीज़ का एहसास करते हैं, चाहे उससे हमारा लेना देना ना भी हो, फिर भी वो बातें बीच-बीच में हमें किसी भी तरह से तंग करती ही रहती हैं, और तंग यहाँ तक करती हैं कि हम सोचते हैं कि, अरे... ये हमने कब किया, ये बात सामने क्यों आई, कुछ समझ नहीं आ रहा है। ये हम कहते रहते हैं। लेकिन ये बात हम सबको आज मान लेनी चाहिए कि कुछ भी हम एहसास कर लेते हैं या कर रहे हैं, तो उसका कहीं न कहीं हमारे बातों से कनेक्शन है। कनेक्शन ऐसा नहीं है कि आपको कुछ नुकसान होगा, लेकिन उससे हमारी शक्ति तो ज़रूर नष्ट होगी और नष्ट

हो भी रही है। जैसे आज समाज में एक कैंसर की तरह फैला हुआ ज़हर सोशल मीडिया, वाट्स एप्प, फेसबुक है, जिसपर कई बार अननोन नम्बर से मैसेज आता है। आपका उससे कोई लेना देना नहीं, लेकिन आप कई बार जब उसपर देखते हैं, तो वो कोई अच्छा मैसेज है, बुरा मैसेज है, आप देखते हैं, पढ़ते हैं, और यदि वो आपको अच्छा लग गया, तो आप उसको दूसरों को फॉरवर्ड भी करते हैं। अब ये है बिना मतलब मन को उलझाना। अरे, जो हमारे पास है, वो हमारी ज़रूरत से ज़्यादा है। उससे ज़्यादा सोचने के लिए हमारे पास होना नहीं चाहिए। लेकिन है। तो मन उलझा रहता है। इसीलिए मन की शक्ति घटती चली जा रही है, घटती चली जा रही है। हम सोच रहे हैं कि हम कुछ गलत तो नहीं कर रहे। निश्चित रूप से आप कुछ गलत नहीं कर रहे, लेकिन व्यर्थ बहुत कर रहे हैं। व्यर्थ भी हमारी शक्ति को नष्ट ही करता है। बढ़ाता नहीं है। फिर भी हम मान नहीं रहे। और मन को उन एहसासों के साथ जोड़ते जा रहे हैं जो हमारे दायरे में बिल्कुल भी नहीं आतीं। 'जिस प्रकार ट्रेन में अच्छे सफर के लिए सामान कम चाहिए, वैसे ही ज़िन्दगी में आगे बढ़ने के लिए दिल में अरमान कम चाहिए।' नहीं तो आज सामान अर्थात् इच्छायें, कामनायें, तृष्णायें, व्यर्थ बढ़ता जा रहा है और हम उलझते जा रहे हैं उसकी देख-रेख करने में।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-14 (2017-2018)

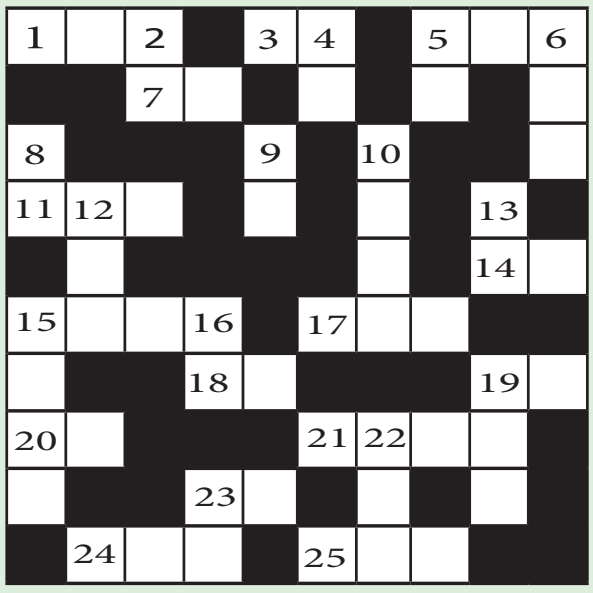

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. आत्मा का रथ, शरीर (2)
4. ....सद्गति दाता एक शिवबाबा है, चाल (2)
5. .....को घुमाने से चक्रवर्ती राजा बनेंगे (2)
6. चरण, पग, पैर (3)
8. पिता, शिवबाबा से एक रिश्ता (2)
9. मार्ग हमारा शुद्ध प्रवृत्ति.... हमारा जीवन मुक्ति, मंज़िल (2)
10. .... होता हमको ऐसा बार-बार है (4)
12. आगे चलकर यज्ञ बहुत.... को पायेगा, बढ़ोत्तरी (3)
13. खर्च, क्षय, नाश (2)
15. कभी भी माया के....होकर कोई कर्म नहीं करना है, गुलाम (4)
16. तुम बच्चों को....होना चाहिए कि भगवान हमारा साथी है, स्वमान (2)
19. रथ को चलाने वाला (3)
22. रस्म, परम्परा (3)
23. देवता, आवाज़ (2)

बायें से दायें

1. .... पर चलने से तुम श्रेष्ठ बनते हो (3)
3. धब्बा, बाप की याद से सारे.... धो लेने हैं (2)
5. बांधेलियाँ बाप की याद में.... पड़ती हैं, तड़प (3)
7. नत, झुका हुआ, विनीत (2)
11. पाक,.... बनो योगी बनो (3)
14. ....जप तप से भगवान नहीं मिलता, हवन (2)
15. ....लुटाने वाले सद्ज्ञान सुनाने वाले (4)
17. सीता को चुराने वाला (3)
18. ....तुम्हारे गले का हार है (2)
19. मुख्य अंश, तत्व, निचोड़ (2)
20. धरनी, धरती, धरा (2)
21. यह ब्राह्मण....सर्व श्रेष्ठ है, तुम्हें इसका नशा रहना चाहिए, वंशज, भाती (4)
23. ....और दुःख जीवन के दो पहलू हैं (2)
24. लाइन, पंक्ति (3)
25. जागरुक, चैतन्य, जागृत (3)

- ब्र.कु. राजेश,शांतिवन।

जम्मू। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में स्टेट एज्युकेशन मिनिस्टर प्रिया सेठी को ईश्वरीय सौगात व टोली भेंट करते हुए ब्र.कु. सुदर्शन बहन। साथ हैं रेडियो मिर्चि की आर.जे. श्वेतिमा जामवाल, रेडियो अनाउंसर माधवी शर्मा, मेडिकल कॉलेज जम्मू की एडमिनिस्ट्रेटर शुभ्रा शर्मा, पूर्व कॉर्पोरेटर एंड सीनियर बीजेपी लीडर शीला हंडु, ब्र.कु. सुष्मा एवं ब्र.कु. रजनी।

भुवनेश्वर। 'ओडिशा इंटरनेशनल ट्रेड फेयर-2018' का उद्घाटन करने के बाद वहाँ ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई आध्यात्मिक प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए मिनिस्टर एम.एस.एम.ई. एंड हाईयर एज्युकेशन प्रफुल्ल समल।

मोहाली-पंजाब। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए ऑल इंडिया रेडियो की स्टेशन डायरेक्टर पूनम अमृत सिंह, गुरचरण सिंह शरण, ज्युडिशियल मेम्बर,कंज़्यूमर डिस्प्युट रेड्रेसल कमिशन, ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. रमा व अन्य।

समराला-पंजाब। शिवरात्रि महोत्सव के उपलक्ष्य में शिव ध्वजारोहण करते हुए मालवा कॉलेज के वाइस प्रेसिडेन्ट जसप्रीत सिंह आहलूवालिया, एम.सी. प्रकाश कौर, पूर्व एम.सी. अमरनाथ टागरा, ब्र.कु.नीलम, ब्र.कु. सुष्मा व अन्य।

छत्तरपुर-म.प्र.। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 'वर्तमान परिवेश में नारी की भूमिका' विषयक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए नगर पालिका अध्यक्षा अर्चना सिंह, महिला कांग्रेस जिला उपाध्यक्षा अंजना चतुर्वेदी, डी.पी.एस. की प्राचार्या पांचाली दास, डॉ. गायत्री नामदेव, बी.एड कॉलेज की प्रोफेसर विनीता गुप्ता, ब्र.कु.शैलजा, ब्र.कु. माधुरी एवं ब्र.कु. रीना।

शिमला-हि.प्र.। सुखसागर तारादेवी होटल में विभिन्न राज्यों के इफको वर्किंग स्टाफ को वैल्यू एज्यूकेशन ट्रेनिंग देने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. बहनें।